

दैनिक समसामयिकी विश्लेषण

समय: 45 मिनट

दिनांक: 11-10-2025

विषय सूची

- » अफगानिस्तान के विदेश मंत्री का भारत दैरा
- » इजराइल-हमास युद्धविराम का वैश्विक व्यापार पर प्रभाव
- » विदेश मंत्रालय द्वारा 2025 के मसौदा ओवरसीज़ मोबिलिटी विधेयक पर टिप्पणियाँ आमंत्रित
- » AI अर्थव्यवस्था में रोजगार सृजन का रोडमैप
- » ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन तीव्रता लक्ष्य नियम
- » राष्ट्रीय रेड लिस्ट रोडमैप और विज्ञ 2025-2030

संक्षिप्त समाचार

- » सावलकोट जलविद्त परियोजना
- » भारत टैक्सी
- » CCRAS द्वारा स्पार्क 4.0 लॉन्च किया
- » चीन द्वारा दुर्लभ-पृथ्वी धातुओं पर निर्यात नियंत्रण सख्त
- » राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन के अंतर्गत तीन प्रमुख बंदरगाहों को हरित हाइड्रोजन केंद्र के रूप में मान्यता प्रदान
- » बायोमेडिकल रिसर्च करियर प्रोग्राम
- » THE वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग्स 2026
- » नोबेल शांति पुरस्कार, 2025

अफगानिस्तान के विदेश मंत्री का भारत दौरा

संदर्भ

- अफगानिस्तान के तालिबान विदेश मंत्री ने नई दिल्ली में विदेश मंत्री एस. जयशंकर से भेंट की।

परिचय

- यह भारत और तालिबान शासन के बीच 2021 में सत्ता में आने के बाद प्रथम उच्च-स्तरीय राजनयिक बैठक है।
- उनकी यात्रा रूस में अफगानिस्तान पर आयोजित एक क्षेत्रीय बैठक के बाद हुई, जिसमें भारत, चीन, पाकिस्तान, ईरान और मध्य एशियाई देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

भारत-तालिबान राजनयिक संपर्क

- आतंकवाद संबंधी आश्वासन:** अफगानिस्तान ने भारत को आश्वासन दिया कि वह किसी भी समूह को अपनी भूमि का उपयोग किसी अन्य देश के विरुद्ध करने की अनुमति नहीं देगा — यह भारत की आतंकवाद संबंधी चिंताओं के लिए एक महत्वपूर्ण सुरक्षा आश्वासन है।
- भारत का दूतावास पुनः खोलना:** विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने घोषणा की कि भारत काबुल में अपना पूर्ण दूतावास पुनः खोलेगा, जो 2022 में मानवीय और व्यापारिक उद्देश्यों के लिए स्थापित तकनीकी मिशन को अपग्रेड करेगा।
- राजनयिक परिप्रेक्ष्य:** चीन, रूस, ईरान, पाकिस्तान और तुर्की सहित लगभग एक दर्जन देश पहले से ही काबुल में दूतावास चला रहे हैं।
 - भारत का दूतावास पुनः खोलने का निर्णय उसके रणनीतिक और आर्थिक हितों की रक्षा के लिए एक संतुलित पुनः संपर्क रणनीति को दर्शाता है।

महत्व

- रणनीतिक संतुलन:** यह कदम पाकिस्तान और चीन की बढ़ती उपस्थिति के बीच अफगानिस्तान में प्रभाव बनाए रखने के लिए भारत के व्यावहारिक दृष्टिकोण को दर्शाता है।

- आतंकवाद विरोधी फोकस:** भारत का अफगान भूमि का आतंकवाद के लिए उपयोग न होने पर बल देना लश्कर-ए-तैयबा और जैश-ए-मोहम्मद जैसे समूहों को लेकर उसकी चिंताओं को सीधे संबोधित करता है।
- राजनयिक मान्यता:** भारत ने तालिबान सरकार को आधिकारिक रूप से मान्यता नहीं दी है, लेकिन यह संपर्क काबुल पर उसके नियंत्रण की वास्तविक स्वीकृति को दर्शाता है।
- क्षेत्रीय सहयोग:** अफगान स्थिरता के लिए भारत की बहु-स्तरीय रणनीति को मॉस्को फॉर्मेट जैसे क्षेत्रीय मंचों में भागीदारी दर्शाती है।

भारत द्वारा तालिबान शासन से संपर्क करने के कारण

- रणनीतिक यथार्थवाद और भू-राजनीतिक प्रासंगिकता:** 2021 से तालिबान का अफगानिस्तान पर पूर्ण नियंत्रण उसे वास्तविक प्राधिकरण बनाता है; भारत के हितों की रक्षा के लिए संपर्क आवश्यक है।
 - काबुल की अनदेखी करने से पाकिस्तान और चीन को क्षेत्र में प्रभाव बढ़ाने का अवसर मिलेगा।
 - संपर्क सुनिश्चित करता है कि भारत अफगानिस्तान के भविष्य को आकार देने में एक प्रासंगिक क्षेत्रीय खिलाड़ी बना रहे।
- सुरक्षा चिंताएं:** भारत को पाकिस्तान समर्थित समूहों से उत्पन्न सीमा पार आतंकवाद का साझा खतरा है।
 - तालिबान ने भारत को आश्वासन दिया है कि अफगान भूमि का उपयोग अन्य देशों के विरुद्ध नहीं किया जाएगा — यह भारत की प्रमुख सुरक्षा मांग है।
- पूर्व निवेश और विकास परियोजनाओं की रक्षा:** भारत ने अफगान बुनियादी ढांचे, शिक्षा और स्वास्थ्य में 3 अरब अमेरिकी डॉलर से अधिक का निवेश किया है — जिसमें ज़रांज-डेलाराम राजमार्ग, सलमा (भारत-अफगानिस्तान मैत्री) बांध एवं संसद भवन शामिल हैं।
 - संपर्क भारत को इन रुकी हुई परियोजनाओं की रक्षा और संभवतः पुनः आरंभ करने की अनुमति देता है।
- क्षेत्रीय शक्ति बदलावों की प्रतिक्रिया:** चीन ने खनन और बुनियादी ढांचे के सौदों के माध्यम से अपनी

उपस्थिति बढ़ाई है; रूस एवं ईरान भी तालिबान के साथ सक्रिय राजनीयिक संबंध बनाए हुए हैं।

- ▲ जब क्षेत्रीय प्रतिद्वंद्वी काबुल में प्रभाव सुदृढ़ कर रहे हैं, तब भारत अलग-थलग नहीं रह सकता।
- **आर्थिक और संपर्क हित:** अफगानिस्तान भारत की मध्य एशिया से संपर्क रणनीति में केंद्रीय भूमिका निभाता है, विशेष रूप से ईरान के चाबहार बंदरगाह के माध्यम से।
- ▲ दीर्घकालिक संपर्क व्यापार गलियारों, ऊर्जा पहुंच और चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI) परियोजनाओं का सामान करने में सहायक हो सकता है।

तालिबान के साथ भारत की संपर्क रणनीति

- **मान्यता के बिना संपर्क:** भारत ने काबुल में अपना दूतावास पुनः खोलने की घोषणा की, जो 2022 में स्थापित “तकनीकी मिशन” को अपग्रेड करेगा।
 - ▲ एक चार्ज डी’अफेयर्स नियुक्त किया जाएगा — जो अंतरराष्ट्रीय सहमति तक तालिबान शासन की गैर-मान्यता को दर्शाता है।
 - ▲ यह कदम भारत की भूमि पर उपस्थिति सुनिश्चित करता है, बिना रूस-चीन गुट के साथ सरेखित दिखें।
- **भारत का संतुलन प्रयास:** भारत ने मॉस्को फॉर्मेट की उस सहमति में भाग लिया कि अफगानिस्तान में कोई विदेशी सैन्य उपस्थिति नहीं होनी चाहिए।
 - ▲ हालांकि, भारत सावधानी रखता है कि वह पूरी तरह से रूस या चीन के पक्ष में न दिखें।
 - ▲ एक संतुलित दृष्टिकोण अमेरिका और पश्चिमी सहयोगियों के साथ टकराव से बचाता है।
- **मानवाधिकार और यथार्थवाद:** विगत संयुक्त बयानों के विपरीत, भारत ने मानवाधिकार मुद्दों को उठाने से स्वयं का बचाव किया।
 - ▲ यह भारत की यथार्थवादी कूटनीति को दर्शाता है, आदर्शवादी हस्तक्षेपवाद को नहीं।
 - ▲ यह परिवर्तन भारत के राष्ट्रीय हितों, सुरक्षा और आर्थिक विकास को प्राथमिकता देता है — एक बहुध्रुवीय एवं प्रायः अप्रत्याशित विश्व में।

निष्कर्ष

- 2021 से तालिबान का अफगान क्षेत्र पर नियंत्रण एक भू-राजनीतिक वास्तविकता है जिसे विश्व को स्वीकार करना होगा।
- भारत का संपर्क पाकिस्तान-चीन प्रभाव के बीच अफगानिस्तान में एक रणनीतिक उपस्थिति सुनिश्चित करता है।
- दूतावास का पुनः खोलना और सहयोग का नवीनीकरण भारत की विदेश नीति में एक व्यावहारिक बदलाव को दर्शाता है।

Source: TH

इज़राइल-हमास युद्धविराम का वैश्विक व्यापार पर प्रभाव

संदर्भ

- इज़राइल और हमास ने युद्धविराम और बंधकों की रिहाई के समझौते पर सहमति व्यक्त की है, जिससे गाज़ा में दो वर्ष से चल रहे संघर्ष के समाप्त होने की संभावना है।
- यह समझौता लाल सागर शिपिंग मार्ग को पुनः खोल सकता है, जिसे ईरान समर्थित माने जा रहे हूती हमलों के कारण बाधित किया गया था।

माल भाड़ा दरें और वैश्विक व्यापार



- 2023 के अंत से माल भाड़ा दरों में तीन गुना तक वृद्धि हुई, क्योंकि जहाजों को केप ऑफ गुड होप के चारों ओर मोड़ना पड़ा।
- छोटे स्वेज नहर मार्ग अवरुद्ध हो गए, जिससे पारगमन समय, शिपिंग लागत और कंपनियों के मुनाफे में वृद्धि हुई।
- भारत का व्यापार विशेष रूप से प्रभावित हुआ, क्योंकि इसका 90–95% हिस्सा विदेशी वाहकों पर निर्भर करता है, मुख्य रूप से सूएज नहर के माध्यम से।

भारत पर प्रभाव

- निर्यात संबंधी चुनौतियाँ:** लंबे मार्गों के कारण लागत और पारगमन समय बढ़ा, जिससे कम मार्जिन वाले, श्रम-प्रधान उत्पादों के लाभ में कमी आई।
- परिवहन लागत:** भारतीय निर्यातकों को विदेशी शिपिंग कंपनियों को अधिक भुगतान करना पड़ा, जो लाल सागर संकट से पहले ही \$100 अरब सालाना से अधिक था।
- रणनीतिक परियोजनाएँ जोखिम में:** भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारा (IMEC) में देरी हो सकती है।
 - IMEC का उद्देश्य रेल, जहाज-रेल नेटवर्क और सड़क मार्गों के माध्यम से यूरोप के लिए वैकल्पिक मार्ग प्रदान करना है, जिससे स्वेज नहर पर निर्भरता कम हो और पारगमन समय में 40% तक की बचत हो सके।
- नीतिगत प्रतिक्रिया:** संकट ने भारत की विदेशी शिपिंग पर निर्भरता और जहाज निर्माण में चीन की रणनीतिक बढ़त को उजागर किया।
 - केंद्रीय मंत्रिमंडल की मंजूरी (₹69,725 करोड़ का पैकेज) भारत के जहाज निर्माण क्षेत्र को पुनर्जीवित करने का लक्ष्य रखती है।
 - शिपबिल्डिंग वित्तीय सहायता योजना (SBFAS) को 2036 तक बढ़ाया गया है, जिसमें ₹24,736 करोड़ का प्रावधान है।
 - राष्ट्रीय जहाज निर्माण मिशन इन पहलों की निगरानी करेगा।

अंतरराष्ट्रीय समुद्री व्यापार मार्गों में प्रमुख अवरुद्ध बिंदु

- हॉर्मुज जलडमरुमध्य:** फारस की खाड़ी और ओमान की खाड़ी के बीच स्थित, यह जलडमरुमध्य मध्य पूर्व से तेल आपूर्ति के लिए एक महत्वपूर्ण मार्ग है।
 - विश्व की तेल आपूर्ति का एक बड़ा हिस्सा इस चौक पॉइंट से होकर गुजरता है।
- मलक्का जलडमरुमध्य:** मलय प्रायद्वीप और इंडोनेशिया के सुमात्रा द्वीप के बीच स्थित, यह विश्व के सबसे व्यस्त जलमार्गों में से एक है।
 - यह हिंद महासागर को दक्षिण चीन सागर और प्रशांत महासागर से जोड़ता है, जिससे यह यूरोप, मध्य पूर्व एवं पूर्वी एशिया के बीच व्यापार के लिए एक प्रमुख मार्ग बनता है।
- पनामा नहर:** अटलांटिक और प्रशांत महासागरों को जोड़ने वाली यह नहर अमेरिका, यूरोप एवं एशिया के बीच समुद्री व्यापार के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।
 - यह जहाजों को दक्षिण अमेरिका के खतरनाक और लंबे मार्ग से बचने की सुविधा देती है।
- ताइवान जलडमरुमध्य:** ताइवान और मुख्य भूमि चीन के बीच स्थित, यह जलडमरुमध्य पूर्वी एशिया क्षेत्र में शिपिंग के लिए आवश्यक है।
 - यह चीन, ताइवान, जापान और अन्य एशियाई देशों के बीच माल परिवहन के लिए एक अत्यधिक व्यस्त जलमार्ग है।

प्रमुख अपेक्षित परिणाम

- युद्धविराम से माल भाड़ा दरों में कमी आ सकती है और वैश्विक व्यापार में सुधार हो सकता है, विशेष रूप से भारत-यूरोप निर्यात में।
- दीर्घकालिक प्रभाव हूती समूह की अनुपालन और लाल सागर मार्ग की सुरक्षा पर निर्भर करेगा।
- अब जब माल भाड़ा दरों में कमी की संभावना है, भारत के कृषि उत्पाद, वस्त्र, जूते और समुद्री उत्पाद जैसे कम मार्जिन वाले निर्यात को यूरोप तक आसान पारगमन मिल सकता है।

- भारत यूरोप, अमेरिका, अफ्रीका और पश्चिम एशिया के साथ अपने व्यापार के लिए स्वेज नहर मार्ग पर अत्यधिक निर्भर है।
- भारत अब समुद्री लॉजिस्टिक्स में आत्मनिर्भरता को प्राथमिकता दे रहा है, जिसमें जहाज निर्माण भी शामिल है, ताकि रणनीतिक कमजोरियों को कम किया जा सके।

Source: IE

विदेश मंत्रालय द्वारा 2025 के मसौदा ओवरसीज़ मोबिलिटी विधेयक पर टिप्पणियाँ आमंत्रित

समाचार में

- विदेश मंत्रालय ने प्रस्तावित ओवरसीज़ मोबिलिटी (सुविधा और कल्याण) विधेयक, 2025 पर टिप्पणियाँ और सुझाव मांगे हैं।

परिचय

- प्रस्तावित ओवरसीज़ मोबिलिटी (सुविधा और कल्याण) विधेयक, 2025 व्यापक प्रवासन प्रबंधन की परिकल्पना करता है, और भारतीय नागरिकों के विदेशी रोजगार को नियंत्रित करने के लिए सुरक्षित एवं व्यवस्थित प्रवासन की व्यवस्था विकसित करके नियामक तंत्र स्थापित करता है।
- यह एक ऐसा ढांचा भी स्थापित करता है जो प्रवासियों के संरक्षण और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए नीतियाँ एवं योजनाएँ बनाने हेतु नीति क्रियाओं को प्रोत्साहित करता है।
- यह वर्तमान प्रवासन अधिनियम, 1983 की जगह लेगा।

विधेयक की प्रमुख विशेषताएँ

- ओवरसीज़ मोबिलिटी और कल्याण परिषद की स्थापना: प्रवासन शासन के लिए सर्वोच्च निकाय के रूप में गठित की जाएगी, जिसकी अध्यक्षता विदेश मंत्रालय के सचिव द्वारा पदेन अध्यक्ष के रूप में की जाएगी।
 - परिषद अधिकारों का प्रयोग करेगी, कार्यान्वयन की निगरानी करेगी, और विभिन्न मंत्रालयों एवं हितधारकों के बीच समन्वय सुनिश्चित करेगी।

- संतुलित दृष्टिकोण: विदेश में गतिशीलता के अवसरों को प्रोत्साहित करता है, साथ ही कमजोर प्रवासी वर्गों (विशेष रूप से खाड़ी सहयोग परिषद एवं दक्षिण-पूर्व एशिया में कम-कुशल श्रमिकों) की सुरक्षा सुनिश्चित करता है।
 - यह नैतिक भर्ती और निष्पक्ष श्रम प्रथाओं पर बल देगा।
- मोबिलिटी रिसोर्स सेंटर्स (MRCs): भारत भर में स्थापित किए जाएंगे ताकि संभावित प्रवासियों को जानकारी, संसाधन, परामर्श और प्रस्थान पूर्व प्रशिक्षण प्रदान किया जा सके।
 - इनका उद्देश्य विदेश जाने से पहले श्रमिकों की जागरूकता, कौशल समन्वयन और तैयारी को बढ़ाना है।
- डेटा-आधारित नीति प्रबंधन: भर्ती प्रवृत्तियों, शिकायतों और कल्याण परिणामों की निगरानी के लिए एक राष्ट्रीय प्रवासी डेटाबेस बनाने पर ध्यान केंद्रित करता है।
- विदेशी प्लेसमेंट एजेंसियों का मान्यता और विनियमन: सभी प्लेसमेंट एजेंसियों को सक्षम प्राधिकरण द्वारा मान्यता प्राप्त करनी होगी।
- दंड और प्रवर्तन: सक्षम प्राधिकरण के आदेशों का उल्लंघन करने वाली विदेशी प्लेसमेंट एजेंसियों के लिए सख्त दंड — प्रत्येक उल्लंघन पर ₹5 लाख से कम का जुर्माना नहीं होगा।

Source: PIB

AI अर्थव्यवस्था में रोजगार सृजन का रोडमैप

समाचार में

- नीति आयोग ने एआई अर्थव्यवस्था में रोजगार सृजन के लिए एक रोडमैप जारी किया है।

रोडमैप के बारे में

- “एआई अर्थव्यवस्था में रोजगार सृजन के लिए रोडमैप” नीति आयोग के फ्रंटियर टेक हब द्वारा NASSCOM और BCG के सहयोग से, IBM, इंफोसिस, टेक महिंद्रा,

LTIMindtree, टेलीपरफॉर्मेंस और अन्य उद्योग नेताओं की विशेषज्ञ परिषद के मार्गदर्शन में विकसित किया गया है।

- यह 2035 तक भारत को एक विश्वसनीय वैश्विक एआई कार्यबल और नवाचार भागीदार बनाने का मार्ग निर्धारित करता है।
- यह दर्शाता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) भारत के तकनीकी सेवा क्षेत्र को कैसे बदल रही है और संभावित रोजगार हानि को रोजगार सृजन के अवसरों में बदलने की रणनीतियाँ प्रस्तावित करता है।

प्रमुख विशेषताएँ

- राष्ट्रीय एआई प्रतिभा मिशन:** यह एक राष्ट्रीय समन्वित मिशन का प्रस्ताव करता है, जिसका उद्देश्य 2035 तक भारत को विश्व की एआई कार्यबल राजधानी बनाना है — बड़े पैमाने पर कौशल विकास, पुनः कौशल प्रशिक्षण और नवाचार के माध्यम से।
- रोडमैप के मूल स्तंभ:**
 - शिक्षा में एआई — स्कूलों, विश्वविद्यालयों और व्यावसायिक प्रशिक्षण में एआई साक्षरता को एकीकृत करना।
 - राष्ट्रीय पुनः कौशल इंजन — लाखों तकनीकी और ग्राहक अनुभव (CX) पेशेवरों को एआई-संवर्धित भूमिकाओं के लिए तैयार करना।
 - वैश्विक एआई प्रतिभा चुंबक — शीर्ष एआई प्रतिभाओं को बनाए रखना और आकर्षित करना, जिससे भारत एआई कौशल का वैश्विक केंद्र बन सके।

महत्व

- एआई अर्थव्यवस्था में रोजगार सृजन के लिए रोडमैप सरकार, उद्योग और अकादमिक संस्थानों के बीच सहयोग का आह्वान करता है, जो चल रहे इंडिया एआई मिशन के साथ संरचित है, ताकि आधारभूत संरचना एवं प्रतिभा पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण किया जा सके।
- इसका उद्देश्य रोजगारों की सुरक्षा करना और 2035 तक भारत को वैश्विक एआई नेता के रूप में स्थापित करना है, जिसमें उद्योग एवं विकास भागीदारों का समर्थन है।

चिंताएँ

- एआई 2031 तक भारत के \$245 अरब के तकनीकी और ग्राहक अनुभव (CX) क्षेत्रों में रोजगारों को विस्थापित

कर सकता है, विशेष रूप से नियमित भूमिकाओं में (जैसे QA इंजीनियर, L1 सपोर्ट)।

- हालांकि, समय पर हस्तक्षेप के साथ आगामी पाँच वर्षों में 40 लाख नई एआई-प्रेरित रोजगार सृजित की जा सकती हैं।

आगे की राह

- एआई पहले से ही भारत के तकनीकी और ग्राहक अनुभव क्षेत्रों में रोजगारों को बदल रहा है, जिससे नियमित भूमिकाएँ अप्रासंगिक होने के खतरे में हैं।
- हालांकि, समय पर कौशल विकास, पुनः प्रशिक्षण और नवाचार के साथ, भारत उभरती एआई-प्रथम भूमिकाओं के लिए एक वैश्विक केंद्र बन सकता है।
- सरकार, उद्योग और अकादमिक संस्थानों के बीच सहयोग के साथ, देश वर्तमान रोजगारों की रक्षा कर सकता है और एआई में वैश्विक नेतृत्व स्थापित कर सकता है।

नीति फ्रंटियर टेक हब

- नीति फ्रंटियर टेक हब “विकसित भारत” के लिए एक एक्शन टैंक है।
- यह सरकार, उद्योग और अकादमिक संस्थानों के 100 से अधिक विशेषज्ञों के सहयोग से 20+ प्रमुख क्षेत्रों में एक 10-वर्षीय रोडमैप तैयार कर रहा है, ताकि अग्रणी तकनीकों का उपयोग कर परिवर्तनकारी विकास एवं सामाजिक विकास सुनिश्चित किया जा सके।
- देशभर में हितधारकों को सशक्त बनाकर और सामूहिक कार्रवाई को प्रेरित कर, यह हब आज ही कार्रवाई की आवश्यकता को उजागर कर रहा है — जिससे 2047 तक एक समृद्ध, लचीला और तकनीकी रूप से उन्नत भारत की नींव रखी जा सके।

Source :PIB

ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन तीव्रता लक्ष्य नियम

समाचार में

- केंद्र सरकार ने चार उच्च-उत्सर्जन क्षेत्रों — एल्युमिनियम, सीमेंट, क्लोर-एल्कली और लुगदी एवं कागज — के

लिए पहले कानूनी रूप से बाध्यकारी ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन तीव्रता (GEI) लक्ष्य नियम, 2025 अधिसूचित किए हैं।

- ये नियम कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग योजना (CCTS), 2023 का एक प्रमुख भाग हैं, जो भारत के घरेलू कार्बन बाजार को क्रियान्वित करता है।

परिचय

- ये नियम प्रत्येक उत्पाद इकाई पर ग्रीनहाउस गैस (GHG) उत्सर्जन को कम करने के लिए क्षेत्र-विशिष्ट लक्ष्य निर्धारित करते हैं, और कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग योजना (CCTS), 2023 के अंतर्गत भारत के घरेलू कार्बन बाजार को क्रियान्वित करते हैं।
- यह कदम भारत की पेरिस समझौते की उस प्रतिबद्धता का समर्थन करता है, जिसके अंतर्गत 2030 तक 2005 के स्तर की तुलना में जीडीपी की उत्सर्जन तीव्रता को 45% तक कम करना है।

GEI लक्ष्य नियम, 2025 की प्रमुख विशेषताएँ

- एल्युमिनियम, सीमेंट, क्लोर-एल्कली और लुगदी एवं कागज क्षेत्रों की 282 औद्योगिक इकाइयों पर लागू।
- वर्ष 2025–26 और 2026–27 के लिए उत्सर्जन तीव्रता (tCO₂e प्रति यूनिट उत्पादन) के लक्ष्य निर्धारित।
- लक्ष्यों को पूरा करने या पार करने पर कार्बन क्रेडिट जारी किए जाएंगे, जिन्हें घरेलू कार्बन बाजार में व्यापार योग्य बनाया जाएगा।
- गैर-अनुपालन पर केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड द्वारा दंड और पर्यावरणीय क्षतिपूर्ति लागू की जाएगी।

कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग योजना (CCTS), 2023 से संबंध

- CCTS ढांचा उत्सर्जन में कमी से अर्जित कार्बन क्रेडिट के निर्गमन, सत्यापन और व्यापार को सक्षम बनाता है।
- यह पूर्ववर्ती PAT योजना से परिवर्तन को दर्शाता है, जिसमें उत्सर्जन व्यापार को प्रोत्साहित करने के लिए कोई बाजार तंत्र नहीं था।

पहलू	GEI नियम & CCTS, भारत	यूरोपीय संघ उत्सर्जन व्यापार प्रणाली (EU ETS)	चीन का राष्ट्रीय ETS
बाजार की शुरुआत	2025 (चुनिंदा क्षेत्रों में कानूनी रूप से बाध्यकारी पायलट)	2005 (विश्व का प्रथम प्रमुख ईटीएस)	2021 (राष्ट्रीय लॉन्च, चरणबद्ध क्षेत्र समावेशन)
कवर किए गए क्षेत्र	एल्युमिनियम, सीमेंट, क्लोर-क्षार, लुगदी और कागज	विद्युत, औद्योगिक क्षेत्र, विमानन	प्रारंभ में विद्युत संयंत्र, क्षेत्रों का विस्तार करने की योजना
अनुपालन तंत्र	प्रति उत्पाद इकाई उत्सर्जन तीव्रता लक्ष्य; व्यापार योग्य कार्बन क्रेडिट	प्रति वर्ष निश्चित उत्सर्जन सीमा के साथ कैप-एंड-ट्रेड	कैप-एंड-ट्रेड पूर्ण उत्सर्जन पर केंद्रित है
नियामक प्राधिकरण	ऊर्जा दक्षता ब्यूरो, सीपीसीबी	यूरोपीय आयोग, राष्ट्रीय नियामक	चीन के पारिस्थितिकी और पर्यावरण मंत्रालय
कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग	घरेलू बाजार व्यापार क्रिया	मूल्य संकेतों के साथ सशक्त यूरोपीय संघ-व्यापी कार्बन बाजार	उभरता हुआ बाजार, परिष्कार में विकसित हो रहा है
एकीकरण	वर्तमान में केवल घरेलू बाजार	वैश्विक कार्बन बाजारों से जुड़ा हुआ; विकसित हो रहा है	घरेलू बाजार पर ध्यान केंद्रित लेकिन विस्तार की संभावना

- यह एक बाजार-आधारित दृष्टिकोण है जो औद्योगिक डीकार्बोनाइजेशन और लागत-प्रभावी अनुपालन को प्रोत्साहित करता है।

भारत के लिए संभावित लाभ

- औद्योगिक क्षेत्रों को अधिक ऊर्जा दक्षता और कम कार्बन उत्सर्जन की ओर प्रेरित करता है।
- 2005 के आधार स्तर की तुलना में 2030 तक जीडीपी की उत्सर्जन तीव्रता को 45% तक कम करने की भारत की प्रतिबद्धता का समर्थन करता है।
- कम-कार्बन प्रौद्योगिकियों में नवाचार को बढ़ावा देता है और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को सुविधाजनक बनाता है।
- कार्बन क्रेडिट व्यापार के अवसरों के माध्यम से आर्थिक मूल्य उत्पन्न करता है।
- अनिवार्य अनुपालन और दंड के माध्यम से पर्यावरणीय शासन को सुदृढ़ करता है।

आगामी चुनौतियाँ

- क्रेडिट की विश्वसनीयता बनाए रखने के लिए सुदृढ़ मापन, रिपोर्टिंग और सत्यापन (MRV) प्रणाली सुनिश्चित करना।
- कार्बन क्रेडिट में मूल्य अस्थिरता और बाजार सट्टा गतिविधियों का प्रबंधन करना।
- विशेष रूप से छोटे उद्योगों को संक्रमण लागत और तकनीकी अनुकूलन वहन करने में सक्षम बनाना।
- कार्बन बाजार के प्रभावी संचालन के लिए क्षमता निर्माण और संस्थागत ढांचे की आवश्यकता।

अंतर्राष्ट्रीय कार्बन बाजारों के साथ तुलना

आगे की राह

- चरणबद्ध विस्तार:** प्रारंभिक चार क्षेत्रों के अलावा धीरे-धीरे और अधिक क्षेत्रों को शामिल करना।
- क्षमता निर्माण:** लक्ष्यों को पूरा करने के लिए ज्ञान और वित्तीय तंत्र के साथ उद्योगों का समर्थन करना।
- मज़बूत एमआरवी प्रणाली:** क्रण प्रामाणिकता के लिए डिजिटल निगरानी, सेंसर और ब्लॉकचेन की तैनाती।

Source: IE

राष्ट्रीय रेड लिस्ट रोडमैप और विज्ञ 2025-2030

समाचार में

- भारत ने आधिकारिक रूप से IUCN वर्ल्ड कंजर्वेशन कांग्रेस 2025 में राष्ट्रीय रेड लिस्ट रोडमैप और विज्ञ 2025-2030 लॉन्च किया है, जो प्रजातियों के मूल्यांकन एवं संरक्षण योजना में एक परिवर्तनकारी कदम है।

राष्ट्रीय रेड लिस्ट रोडमैप और विज्ञ 2025-2030

- यह वनस्पति और जीव-जंतु दोनों के लिए रेड डेटा बुक्स प्रकाशित करने की परिकल्पना करता है, जो संकटग्रस्त प्रजातियों का प्रामाणिक दस्तावेज़ प्रदान करेगा।
- यह भारतीय प्राणी सर्वेक्षण (ZSI), भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण (BSI), IUCN इंडिया और सेंटर फॉर स्पीशीज़ सर्वाइवल द्वारा विकसित किया गया है।
- भारत का लक्ष्य 2030 तक वनस्पति और जीव-जंतु दोनों के लिए राष्ट्रीय रेड डेटा बुक्स प्रकाशित करना है।

मुख्य विशेषताएँ

- यह 2030 तक स्थलीय और समुद्री जैव विविधता सहित लगभग 11,000 वनस्पति और जीव-जंतु प्रजातियों का मूल्यांकन करेगा।
- यह IUCN रेड लिस्ट प्रोटोकॉल का पालन करता है और जैव विविधता पर कन्वेशन तथा कुनमिंग-मॉन्ट्रियल वैश्विक जैव विविधता ढांचे के अंतर्गत भारत की प्रतिबद्धताओं का समर्थन करता है।
- इसमें डेटा संग्रह, निगरानी और संरक्षण स्थिति की सार्वजनिक पहुंच के लिए एक केंद्रीकृत डिजिटल प्लेटफॉर्म शामिल है।

भारत के लिए प्रासंगिकता

- भारत, विश्व के 17 मेगाडाइवर्स देशों में से एक है, और भारत में चार वैश्विक जैव विविधता हॉटस्पॉट — हिमालय, पश्चिमी घाट, इंडो-बर्मा एवं सुंडालैंड — हैं।
- यह विश्व की भूमि का केवल 2.4% भाग घेरता है, लेकिन इसमें वैश्विक वनस्पति का लगभग 8% और

वैश्विक जीव-जंतु का 7.5% हिस्सा है, जिनमें से 28% पौधे और 30% जानवर स्थानिक (एंडेमिक) हैं।

- रेड लिस्ट रोडमैप इस अंतर को भरता है, जिससे नीति निर्माण और संसाधन आवंटन के लिए आवश्यक आधारभूत डेटा, खतरे का विश्लेषण और संरक्षण प्राथमिकताएँ प्राप्त होती हैं।
- इसका उद्देश्य भारत की वनस्पति और जीव-जंतु के विलुप्ति जोखिम का मूल्यांकन करने के लिए एक राष्ट्रीय समन्वित, विज्ञान-आधारित ढांचा स्थापित करना है।

आगामी चुनौतियाँ

- कई प्रजातियाँ, विशेष रूप से दूरस्थ पारिस्थितिकी तंत्रों में, अभी भी दस्तावेजीकृत नहीं हैं या उनका अध्ययन अपर्याप्त है।
- प्रभावी कार्यान्वयन के लिए केंद्रीय और राज्य विभागों, अनुसंधान संस्थानों एवं स्थानीय समुदायों के बीच निर्बाध सहयोग आवश्यक है, जो चुनौतीपूर्ण हो सकता है।
- कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने, क्षेत्रीय सर्वेक्षण करने और डिजिटल अवसंरचना बनाए रखने के लिए निरंतर वित्तीय एवं तकनीकी सहायता की आवश्यकता है।
- अवसंरचना परियोजनाएँ प्रायः पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों से टकराती हैं, जिसके लिए सावधानीपूर्वक नीति एकीकरण आवश्यक है।

सुझाव और आगे की राह

- भारत का राष्ट्रीय रेड लिस्ट रोडमैप जैव विविधता की रक्षा और वैश्विक सततता का समर्थन करने का एक रणनीतिक प्रयास है।
- यह संस्थानों को मजबूत करने, स्थानीय समुदायों को शामिल करने, डेटा को नीति निर्माण में एकीकृत करने और वैश्विक संरक्षण भागीदारों के साथ सहयोग पर केंद्रित है।
- रेड लिस्ट देश के भविष्य के पर्यावरणीय और पारिस्थितिकीय ढांचे की आधारशिला बनने की संभावना है।

Source :DD

संक्षिप्त समाचार

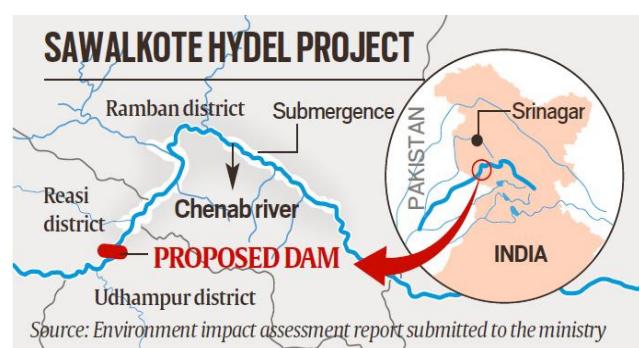
सावलकोट जलविद्युत परियोजना

समाचार में

- हाल ही में पर्यावरण मंत्रालय की एक शीर्ष समिति ने सावलकोट जलविद्युत परियोजना को नई पर्यावरणीय स्वीकृति प्रदान की है।

सावलकोट जलविद्युत परियोजना

- प्रारंभ:** प्रथम बार 1984 में प्रस्तावित, सावलकोट जलविद्युत परियोजना एक रन-ऑफ-द-रिवर जलविद्युत पहल है, जो जम्मू और कश्मीर में चिनाब नदी पर स्थित है।
 - यह राष्ट्रीय जलविद्युत निगम (NHPC) द्वारा विकसित की जा रही है और सिंधु बेसिन में भारत की सबसे बड़ी जलविद्युत परियोजनाओं में से एक बनने की संभावना है, जिसकी प्रस्तावित क्षमता 1,856 मेगावाट है।
- प्रारंभिक स्वीकृति:** इस परियोजना को 2017 में जम्मू और कश्मीर पावर डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (JKPDC) के तहत पर्यावरणीय मंजूरी प्राप्त हुई थी।
- 2021 में, JKPDC ने इसका कार्यान्वयन और नियंत्रण NHPC लिमिटेड को सौंप दिया, जो इसे 2061 तक प्रबंधित करेगा।
- विशेषताएँ:** सावलकोट परियोजना में 192.5 मीटर ऊंचा रोलर कॉम्पैक्टेड कंक्रीट (RCC) ग्रेविटी डैम शामिल होगा, जिसमें प्रथम चरण में 225 मेगावाट क्षमता की छह पावर जनरेटर इकाइयाँ और 56 मेगावाट की एक इकाई तथा दूसरे चरण में 225 मेगावाट क्षमता की दो इकाइयाँ स्थापित की जाएँगी।



Source :TH

भारत टैक्सी

समाचारों में

- भारत जल्द ही भारत टैक्सी नामक एक सहकारी-संचालित राष्ट्रीय राइड-हेलिंग प्लेटफॉर्म लॉन्च करने जा रहा है, जिसे राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस डिवीजन (NeGD) से रणनीतिक और तकनीकी सहयोग प्राप्त होगा।

परिचय

- इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) के अंतर्गत राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस डिवीजन (NeGD) ने सहकार टैक्सी कोऑपरेटिव लिमिटेड (ब्रांड नाम: भारत टैक्सी) के साथ एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए हैं ताकि रणनीतिक और तकनीकी परामर्श प्रदान की जा सके।
- इस पहल को NCDC, IFFCO, AMUL, KRIBHCO, NAFED, NABARD, NDDB और NCEL जैसे प्रमुख सहकारी एवं विकास संस्थानों द्वारा प्रोत्साहित किया जा रहा है।
- यह सहयोग भारत टैक्सी को डिजीलॉकर, उमंग और एपीआई सेतु से जोड़कर निर्बाध डिजिटल सेवाएं प्रदान करेगा।

महत्व

- डिजिटल गवर्नेंस का सहकारी मॉडल:** 'सहकार से समृद्धि' दृष्टिकोण को साकार करता है, जिसमें सहकारी स्वामित्व को डिजिटल नवाचार से जोड़ा गया है।
- मोबिलिटी में आत्मनिर्भर भारत:** विदेशी राइड-हेलिंग ऐप्स पर निर्भरता को कम करता है और एक स्वदेशी, इंटरऑपरेबल इकोसिस्टम का निर्माण करता है।
- नागरिक सशक्तिकरण:** उचित मूल्य निर्धारण, ड्राइवर की गरिमा और डेटा गोपनीयता सुनिश्चित करता है, जिससे सार्वजनिक डिजिटल अवसंरचना की ओर कदम बढ़ता है।
- डिजिटल इंडिया के साथ तालमेल:** भारत के खुले, समावेशी और सुरक्षित डिजिटल सार्वजनिक वस्तुओं के दृष्टिकोण को सुदृढ़ करता है।

Source: PIB

CCRAS द्वारा स्पार्क 4.0 लॉन्च किया

समाचारों में

- आयुष मंत्रालय के अंतर्गत केंद्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (CCRAS) ने अपने प्रमुख स्टूडेंटशिप कार्यक्रम 'आयुर्वेद रिसर्च केन (SPARK)' के चौथे संस्करण की घोषणा की है, जो वर्ष 2025–26 के लिए होगा।

परिचय

- इसका उद्देश्य देशभर के स्नातक आयुर्वेद छात्रों में वैज्ञानिक जिज्ञासा और अनुसंधान कौशल को बढ़ावा देना है।
- SPARK-4.0 के अंतर्गत, भारतीय पारंपरिक चिकित्सा प्रणाली आयोग (NCISM) द्वारा मान्यता प्राप्त कॉलेजों के 300 बैचलर ऑफ आयुर्वेदिक मेडिसिन एंड सर्जरी (BAMS) छात्रों को ₹50,000 की स्टूडेंटशिप प्रदान की जाएगी, जो दो महीनों में ₹25,000 प्रति माह के रूप में वितरित की जाएगी।
- छात्रों को अल्पकालिक स्वतंत्र अनुसंधान परियोजनाएं दी जाएंगी और पूर्णता पर प्रमाणपत्र प्रदान किया जाएगा।

महत्व

- आयुर्वेद के अनुसंधान इकोसिस्टम को सुदृढ़ करता है।
- पारंपरिक चिकित्सा को सार्वजनिक स्वास्थ्य में एकीकृत करने के लिए प्रशिक्षित शोधकर्ताओं की श्रृंखला तैयार करता है।

Source: PIB

चीन द्वारा दुर्लभ-पृथ्वी धातुओं पर निर्यात नियंत्रण सख्त

संदर्भ

- चीन ने दुर्लभ पृथ्वी तत्वों और संबंधित तकनीकों के निर्यात पर नए प्रतिबंधों की रूपरेखा प्रस्तुत की है।

परिचय

- विदेशी कंपनियों को उन उत्पादों के निर्यात के लिए अनुमति लेनी होगी जिनमें चीनी दुर्लभ पृथ्वी तत्वों के अंश मात्र भी शामिल हैं।

- ये नियम प्रथम बार प्रसंस्करण तकनीकों, उपकरणों और बौद्धिक संपदा तक विस्तारित किए गए हैं।
- यह कदम भारत के लिए इलेक्ट्रिक वाहन, नवीकरणीय ऊर्जा और रक्षा क्षेत्रों में आवश्यक इनपुट्स की आपूर्ति को जटिल बना सकता है।
- **दुर्लभ पृथ्वी तत्वों में चीन की प्रधानता**
 - उत्पादन में वर्चस्वः: चीन लगभग 60% खनन करता है और वैश्विक दुर्लभ पृथ्वी तत्वों का लगभग 90% प्रसंस्करण करता है।
 - परिष्करण, पृथक्करण और स्थायी मैग्नेट निर्माण जैसे डाउनस्ट्रीम मूल्य शृंखला के अधिकांश हिस्सों पर नियंत्रण रखता है।

दुर्लभ पृथ्वी तत्व

- दुर्लभ पृथ्वी तत्व पृथ्वी की परत में पाए जाने वाले सत्रह पदार्थों की एक शृंखला है।
 - नाम से भले ही यह दुर्लभ प्रतीत होते हों, लेकिन ये प्रकृति में प्रचुर मात्रा में पाए जाते हैं। इनकी दुर्लभता इनको रासायनिक रूप से अलग करने और औद्योगिक उपयोग के लिए उपयुक्त बनाने की कठिनाई में निहित है।
- नियोडिमियम, डिसप्रोसियम, प्रासियोडिमियम और इट्रियम जैसे दुर्लभ पृथ्वी धातुओं की मांग तकनीकी प्रगति के साथ बढ़ रही है।
- भारी और हल्के दुर्लभ पृथ्वी तत्व भारत, चीन, म्यांमार, जापान, ऑस्ट्रेलिया और उत्तर कोरिया जैसे कई देशों में स्वाभाविक रूप से पाए जाते हैं।
 - चीन दुर्लभ पृथ्वी तत्वों का विश्व का सबसे बड़ा उत्पादक है, इसके बाद अमेरिका का स्थान है।
- **महत्व**
 - ये सेलफोन और कंप्यूटर जैसी रोजमर्रा की तकनीकों में उपयोग किए जाते हैं।
 - ये उन्नत चिकित्सा तकनीकों जैसे एमआरआई, लेजर स्कैलपेल और कुछ कैंसर की दवाओं में भी प्रयुक्त होते हैं।
 - रक्षा अनुप्रयोगों में इनका उपयोग सैटेलाइट संचार, मार्गदर्शन प्रणाली और विमान संरचनाओं में होता है।

- ये कई हरित तकनीकों में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, विशेष रूप से उन तकनीकों में जो शून्य कार्बन उत्सर्जन लक्ष्यों को समर्थन देती हैं, जैसे पवन ट्रबाइन और इलेक्ट्रिक वाहन।

Source: DTE

राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन के अंतर्गत तीन प्रमुख बंदरगाहों को हरित हाइड्रोजन केंद्र के रूप में मान्यता प्रदान

समाचारों में

- नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय ने राष्ट्रीय ग्रीन हाइड्रोजन मिशन के अंतर्गत दीनदयाल, वी.ओ. चिदंबरनार और पारादीप बंदरगाहों को ग्रीन हाइड्रोजन हब के रूप में नामित किया है।

राष्ट्रीय ग्रीन हाइड्रोजन मिशन

- केंद्रीय मंत्रिमंडल ने 2023 में ₹19,744 करोड़ के बजट के साथ राष्ट्रीय ग्रीन हाइड्रोजन मिशन को स्वीकृति दी थी।
- इसका उद्देश्य भारत को ग्रीन हाइड्रोजन और उसके व्युत्पन्न पदार्थों के उत्पादन, उपयोग एवं निर्यात के लिए वैश्विक केंद्र बनाना है, जिसके अंतर्गत 2030 तक प्रति वर्ष 5 मिलियन मीट्रिक टन (MMT) ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है।
- यह अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण ढीकार्बोनाइजेशन, जीवाश्म ईंधन आयात पर निर्भरता में कमी और ग्रीन हाइड्रोजन में भारत को तकनीकी एवं बाजार नेतृत्व प्रदान करने में सहायक होगा।

नवीनतम दिशानिर्देश

- जून 2025 में जारी दिशानिर्देशों के अनुसार, नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (MNRE) अब बिना प्रत्यक्ष वित्तीय सहायता के ग्रीन हाइड्रोजन हब को मान्यता दे सकता है, जिससे ये स्थान विभिन्न केंद्रीय और राज्य योजनाओं के अंतर्गत प्रोत्साहनों का लाभ उठा सकेंगे।
- ये हब हाइड्रोजन उत्पादन और खपत के प्रमुख केंद्र के रूप में कार्य करेंगे, जो एक सतत और प्रतिस्पर्धी हाइड्रोजन अर्थव्यवस्था को समर्थन देंगे।

प्रभाव

- बंदरगाहों को ग्रीन हाइड्रोजन हब के रूप में नामित करने से स्वच्छ ऊर्जा नवाचार को बढ़ावा मिलेगा और भारत की रणनीतिक समुद्री स्थिति का उपयोग कर सतत लॉजिस्टिक्स को प्रोत्साहन मिलेगा।
- परियोजनाओं को सहायक नीतियों और प्रोत्साहनों का लाभ मिलेगा, जिससे औद्योगिक भागीदारी बढ़ेगी, हरित निवेश आकर्षित होंगे तथा स्वच्छ ईंधन तकनीकों में नवाचार को बढ़ावा मिलेगा।
- यह भारत के ऊर्जा आत्मनिर्भरता और 2070 तक शून्य उत्सर्जन प्राप्त करने के व्यापक लक्ष्य के अनुरूप है।

Source :PIB

बायोमेडिकल रिसर्च करियर प्रोग्राम

संदर्भ

- केंद्रीय मंत्रिमंडल ने बायोमेडिकल रिसर्च करियर प्रोग्राम (BRCP) के चरण-III को मंजूरी दे दी है।

परिचय

- बायोमेडिकल रिसर्च करियर प्रोग्राम (BRCP) भारत के स्वास्थ्य और नवाचार परिदृश्य में एक रणनीतिक निवेश है, जिसे ₹1,500 करोड़ के इंडो-यूके साझेदारी द्वारा समर्थन प्राप्त है, जो वैश्विक विशेषज्ञता को राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के साथ संरचित करता है।
- उद्देश्य: बायोमेडिकल विज्ञान, क्लीनिकल और सार्वजनिक स्वास्थ्य अनुसंधान में विश्व स्तरीय अनुसंधान इकोसिस्टम का निर्माण करना।
- 2025–26 से 2030–31: सक्रिय कार्यान्वयन अवधि, जिसके दौरान नए अनुसंधान फेलोशिप, सहयोगात्मक अनुदान और क्षमता निर्माण पहल शुरू की जाएंगी।
- 2031–32 से 2037–38: सेवा अवधि, जिसमें पहले से प्रदान की गई फेलोशिप और अनुदानों को निरंतर समर्थन दिया जाएगा ताकि परियोजनाओं की दीर्घकालिक निरंतरता और पूर्णता सुनिश्चित की जा सके।

अपेक्षित परिणाम

- इस पहल का लक्ष्य 2,000+ शोधकर्ताओं को प्रशिक्षित करना, उच्च प्रभाव वाली प्रकाशन सामग्री, पेटेंट योग्य खोजें और सहकर्मी मान्यता प्राप्त करना है।

- महिला वैज्ञानिकों को 10–15% अधिक समर्थन देने, 25–30% परियोजनाओं को टेक्नोलॉजी रेडिनेस लेवल (TRL-4) और उससे ऊपर तक पहुँचाने, तथा टियर-2/3 क्षेत्रों तक व्यापक पहुँच सुनिश्चित करने का लक्ष्य है।



Source: PIB

THE वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2026

संदर्भ

- ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय ने टाइम्स हायर एजुकेशन (THE) वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2026 के अनुसार लगातार दसवें वर्ष वैश्विक नंबर एक रैंकिंग बनाए रखी है।

परिचय

- यूके-आधारित THE वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग के 22वें संस्करण में 115 देशों और क्षेत्रों के 2,191 विश्वविद्यालयों का मूल्यांकन किया गया है।
- यह मूल्यांकन पाँच क्षेत्रों — शिक्षण, अनुसंधान वातावरण, अनुसंधान गुणवत्ता, अंतरराष्ट्रीय दृष्टिकोण और उद्योग प्रभाव — में 18 प्रदर्शन संकेतकों के आधार पर किया गया है।
- शीर्ष 100 के बाद, विश्वविद्यालयों को विशिष्ट रैंकिंग के बजाय 'रैंक बैंड' सौंपे जाते हैं।

विश्वविद्यालय रैंकिंग 2026: मुख्य बिंदु

- भारत:** अमेरिका के बाद भारत को दूसरा सबसे अधिक प्रतिनिधित्व प्राप्त देश घोषित किया गया है, जिसमें रिकॉर्ड 128 संस्थान शामिल हैं — जो विगत वर्ष के 107 और 2016 के केवल 19 संस्थानों से कहीं अधिक है। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस को 201–250 रैंक

बैंड में रखा गया है, इसके बाद सेविता इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल एंड टेक्निकल साइंसेज को 351–400 रैंक बैंड में स्थान मिला है।

- चीन:** शीर्ष 40 में पाँच विश्वविद्यालय शामिल हैं, जो विगत वर्ष के तीन से अधिक हैं। त्रिंगहुआ विश्वविद्यालय, जो 12वें स्थान पर है, एशिया का शीर्ष विश्वविद्यालय बना हुआ है।
- संयुक्त राज्य अमेरिका:** शीर्ष 10 में से सात स्थान अमेरिका के विश्वविद्यालयों ने प्राप्त किए हैं। हालांकि, समग्र रूप से गिरावट देखी गई है — शीर्ष 20 में पिछले वर्ष की तुलना में छह कम विश्वविद्यालय हैं, और शीर्ष 100 में 35 संस्थान हैं, जो विगत वर्ष के 38 से कम हैं।

World University Rankings 2026: top 10

2026 rank	2025 rank	Institution	Country/region
1	1	University of Oxford	United Kingdom
2	2	Massachusetts Institute of Technology	United States
=3	4	Princeton University	United States
=3	5	University of Cambridge	United Kingdom
=5	3	Harvard University	United States
=5	6	Stanford University	United States
7	7	California Institute of Technology	United States
8	9	Imperial College London	United Kingdom
9	8	University of California, Berkeley	United States
10	10	Yale University	United States

Source: Official THE website

Source: TH

नोबेल शांति पुरस्कार, 2025

संदर्भ

- 2025 का नोबेल शांति पुरस्कार वेनेजुएला की विपक्षी नेता मारिया कोरीना माचाडो को लोकतंत्र को बढ़ावा

देने और राजनीतिक परिवर्तन लाने के प्रयासों के लिए प्रदान किया गया है।

शांति पुरस्कार के बारे में

- यह पुरस्कार नॉर्वेजियन संसद (Stortinget) द्वारा चुनी गई समिति द्वारा प्रदान किया जाता है। शांति पुरस्कार अल्फ्रेड नोबेल की वसीयत में उल्लिखित पाँचवां और अंतिम पुरस्कार क्षेत्र था।
- 1901 से अब तक नोबेल शांति पुरस्कार 105 बार प्रदान किया गया है, जिसमें कुल 139 विजेता शामिल हैं: 92 पुरुष, 19 महिलाएं और 28 संगठन।
- महात्मा गांधी को पाँच बार नामित किया गया, फिर भी उन्हें यह पुरस्कार कभी नहीं मिला, हालांकि उनके आदर्श संयुक्त राष्ट्र चार्टर के साथ सामंजस्यशील हैं।
- 2024 में नोबेल शांति पुरस्कार जापानी संगठन निहोन हिदानक्यो को प्रदान किया गया था, जो हिरोशिमा और नागासाकी के परमाणु बम पीड़ितों की एक जमीनी आंदोलन है, जिन्हें हिबाकुशा के नाम से भी जाना जाता है।

क्या आप जानते हैं?

- नोबेल शांति पुरस्कार मरणोपरांत प्रदान नहीं किया जा सकता।
- यह पुरस्कार 19 बार नहीं दिया गया है, मुख्यतः युद्धों या उपयुक्त उम्मीदवार की अनुपस्थिति के कारण — जिनमें 1914–16, 1918, 1923, 1924, 1928, 1932, 1939–43, 1948, 1955–56, 1966–67 और 1972 शामिल हैं।

Source: TH

